रवींद्रनाथ टैगोर के विचार में क्रिया या गतिविधि आधारित बाल- केंद्रित शिक्षा

रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विचारों में यह अभिव्यक्त किया है कि बच्चों को अपने अध्ययन के लिए केवल स्कूल की आवश्यकता नही है, बल्कि उनको एक ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे उनकी मार्गदर्शक चेतना व्यक्तिगत प्रेम के रूप मे अभिव्यक्त हो। उनका मानना था कि 'प्रेम और कर्म' के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। टैगोर ने अपने शिक्षा दर्शन में सीखने के लिए तीन सिद्धान्तों को अधिक महत्वपूर्ण माना है—

1. स्वतंत्रता।
2. सृजनात्मक स्व- अभिव्यक्ति
3. प्रकृति और इंसानों के साथ सक्रिय सहभागिता

उनका कहना था कि स्वतंत्रता की

स्थिति में ही बच्चे ~~की~~ वास्तविक एवं सही मायनों में शिक्षा के अर्थ और औचित्य के अनुरूप अनुभवों को ग्रहण कर पाएंगे। उन्होंने तत्कालीन शैक्षिक परिवेश में स्थापित विद्यालयों को 'शिक्षा की फैक्टरी', कृत्रिम दुनिया के संदर्भों से अलग और 'सफेद दीवारों के बीच झांकती मृतक के आंखों की पुतली' इत्यादि अभिव्यंजनाओं से विभूषित किया है। बच्चों के संदर्भ में वह स्वतंत्र, मुक्त गतिविधि और उनके स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास के लिए खेल के अधिक हिमायती थे। उन्होंने कहा कि अगर बच्चे कुछ नहीं सीखते हैं या कुछ नहीं सीखना चाहते हैं तो भी उनको खेलने का पर्याप्त एवं समुचित समय दिया जाना चाहिए। बच्चों के खेलने का स्वरूप कुछ भी हो सकता है जैसे— पेड़ों पर चढ़ना, तालाब में तैरना, फूल तोड़ना, प्रकृति के साथ हजारों प्रकार की गतिविधियाँ करना इत्यादि। बच्चे इस प्रकार की क्रियाओं एवं गतिविधियों के माध्यम से अपने शरीर को पोषण, मन को खुशी और बचपन की नैसर्गिक प्रेरणाओं को संतुष्टि प्रदान करने का

प्रयास करते हैं। उन्होंने इस वास्तविकता पर अत्यंत दुःख ~~व्यक्त~~ व्यक्त किया कि तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था किताबों को अधिक प्राथमिकता देकर इनकी गुलामी को प्रोत्साहन देती थी।

टैगोर जी ने अपने शैक्षिक विमर्श मे एक नए सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जिसे गतिविधि के सिद्धान्त के रूप में जाना जाता है। यह शैक्षणिक विधियों के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। यह इस दार्शनिक अवधारणा पर आधारित है कि शरीर और मन को विभाजित नही किया जा सकता। उन्होंने यह स्पष्ट रूप मे व्यक्त किया कि शारीरिक गतिविधि से केवल शरीर को ही स्फूर्ति नही मिलती बल्कि इससे मन भी ऊर्जावान हो जाता है। इसी सिद्धान्त के कारण ही उन्होंनें चलते-फिरते या सचल विद्यालयों की स्थापना पर बल दिया और इन्हें एक आदर्श विद्यालय की संज्ञा प्रदान की।

उनका मानना था कि चलते-चलते

Scanned with CamScanner

पढ़ाना अथवा सीखना शिक्षा प्रदान करने का सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा इसलिए क्योंकि चलते समय हमारा मानसिक संकाय ज्यादा ~~अधिक~~ जाग्रत एवं सजग रहता है जिसके कारण इस समय सीखा गया या ग्रहण किया गया ज्ञान अधिक समय तक स्थायी रहता है।

टैगोर जी ने शांति निकेतन मे इस प्रकार का शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जो बच्चो के नियंत्रण में हो यहाँ पर बच्चें अपनी क्रियाओं एवं गतिविधियों मे स्वयं ही नियंत्रण करते थे एवं अनुचित कार्य करने पर उनके ही द्वारा स्व-दण्ड का विधान था।

रविन्द्रनाथ टैगोर का मानना था कि सक्रिय रूप से सीखना किसी भी जीवित इंसान के लिए प्रत्येक दृष्टिकोण से उपयोगी होती है क्योंकि कक्षा के स्थिर वातावरण में जो शिक्षा दी जाती है उससे शिक्षा एवं बच्चों के बीच अलगाव की भावना उत्पन्न होती है। उन्होंने अपने इस सिद्धान्त को शांतिनिकेतन में अपनाया, जहाँ पर इन्होंने ~~शैक्षिक~~ शैक्षणिक

Scanned with CamScanner

व्यवस्था की योजना अपनी विचार एवं चिंतन के आधार पर गतिविधि सिद्धान्त के अनुरूप किया।

Scanned with CamScanner